© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS | Refereed | Peer Reviewed | Indexed

ISSN : 2454 – 308X | Volume : 06 , Issue : 05 | May 2020

मुंशी प्रेमचंद का हिन्दी साहित्य में योगदान

Ranu Sharma

Research Scholar, Dept. of Hindi

JS University Shikhoabad, Firozabad UP

सार

हिन्दी साहित्य में उपन्यास लेखन का श्रीगणेश भारतेन्दु युग से होता है। किन्तु हिन्दी उपन्यास को नवजीवन देने वाले शख्स कोई है तो वह हैं कलम के सिपाही। इस सिपाही ने उपन्यास के माध्यम से समाज के कोने-कोने पर नजर दौड़ायी चाहे वह निम्नवर्ग हो या निम्न मध्यमवर्ग या फिर मध्यम वर्ग या उच्च वर्ग। सामाजिक वर्ण व्यवस्था ब्राम्हण, क्षत्रीय, वैश्य, शूद्र की स्थितियों को भी बड़े ही गांभीर्य तौर पर समाज के समक्ष रखा। सेवा संदन से लेकर गोदान तक का सफर सामाजिक यथार्थता का ज्वलंत उदाहरण है।'' गांधी जी ने भारतीय समाज को सुधारने के लिए जो कुछ कहा उसे 'सत्यं-शिवं-सुन्दरं' के रूप में हिन्दी गद्य साहित्य में साकार रूप प्रदान करने वाला, गाँधीजी को जैसी भाषा प्रिय थी उसी भाषा को लिखने वाला यदि कोई साहित्यकार हुआ तो वे प्रेमचन्द ही हैं।

मुख्य शब्दः हिन्दी, साहित्य, उपन्यास, शिक्षा, भारतवर्ष इत्यादि।

प्रस्तावना

प्रेमचंद का जन्म वाराणसी से लगभग चार मील दूर, लमही नाम के गाँव में 31 जुलाई, 1880 को हुआ। प्रेमचंद के पिताजी मुंशी अजायब लाल और माता आनन्दी देवी थीं। प्रेमचंद का बचपन गाँव में बीता था। वे नटखट और खिलाड़ी बालक थे और खेतों से शाक-सब्ज़ी और पेड़ों से फल चुराने में दक्ष थे। उन्हें मिठाई का बड़ा शौक़ था और विशेष रूप से गुड़ से उन्हें बहुत प्रेम था। बचपन में उनकी शिक्षा-दीक्षा लमही में हुई और एक मौलवी साहब से उन्होंने उर्दू और फ़ारसी पढ़ना सीखा। एक रुपया चुराने पर 'बचपन' में उन पर बुरी तरह मार पड़ी थी। उनकी कहानी, 'कज़ाकी', उनकी अपनी बाल-स्मृतियों पर आधारित है। कज़ाकी डाक-विभाग का हरकारा था और बड़ी लम्बी-लम्बी यात्राएँ करता था। वह बालक प्रेमचंद के लिए सदैव अपने साथ कुछ सौगात लाता था। कहानी में वह बच्चे के लिये हिरन का छौना लाता है और डाकघर में देरी से पहुँचने के कारण नौकरी से अलग कर दिया जाता है। हिरन के बच्चे के पीछे दौड़ते-दौड़ते वह अति विलम्ब से डाक घर लौटा था। कज़ाकी का व्यक्तित्व अतिशय मानवीयता में डूबा है। वह शालीनता और आत्मसम्मान का पुतला है, किन्तु मानवीय करुणा से उसका हृदय भरा है।

प्रेमचंद के कथा साहित्य की प्रासंगिकता

भारतवर्ष पर दो व्यक्तित्व का गहरा प्रभाव रहा है, प्रथम गाँधी का दूसरा साहित्यकार प्रेमचंद का। ये दोनों दो अलग-अलग क्षेत्र् के सरताज होते हुए भी एक दूसरे से जुडे हुए रहे हैं। गाँधी को यह देश राष्ट्रपिता कहता है, तो प्रेमचन्द को 'उपन्यास सम्राट' कह कर सम्मानित करता है। गाँधी का महत्त्व इस देश की राजनीति पर जितना रहा है, उससे अधिक सामाजिक, साहित्यिक और सांस्कृतिक परिवेश पर भी पडता है। इस अर्थ में प्रेमचन्द के कथा साहित्य पर गाँधीवाद का प्रभाव से इंकार नहीं किया जा सकता है। हिन्दी साहित्य पर प्रेमचन्द का वैसा ही प्रभाव रहा है जिस तरह से उस दौर में गाँधी का रहा है। प्रेमचन्द ने हिन्दी कथा साहित्य को निश्चित दिशा दी है। प्रेमचन्द आज भी उतने ही प्रासंगिक है जितने अपने दौर में रहे हैं, बल्कि किसान जीवन की उनकी पकड और समझ को देखते हुए उनकी प्रासंगिकता और अधिक बढ जाती है। किसान की दृष्टि से उनकी पकड और समझ को देखते हुए उनकी प्रासंगिकता और अधिक बढ जाती है। किसान की दृष्टि से अगर प्रेमचन्द के कथा साहित्य को यदि पुनः देखा जाए तो कई अर्थों में प्रेमचन्द गाँधी से भी आगे की सोच रखते हुए दिखाई देते हैं। किसान जीवन के यथार्थवादी चित्रण में प्रेमचन्द हिन्दी साहित्य में अनूठे और लाजवाब रचनाकार रहे हैं।

सहित्य की समीक्षा

(कौर, 2017) में "*प्रेमचंद का कथा साहित्यः भारतीय किसान की स्थिति*" का अध्ययन किया और पाया कि प्रेमचंद के इस ओर झुकाव होने का एक राजनैतिक परिप्रेक्ष्य भी है। कांग्रेस के विभाजन(1907ई.) के बाद उसका प्रभाव और कार्यक्षेत्र धीरे-धीरे घटा। जब प्रथम विश्वयुद्ध 1914ई. में हुआ, जिसमें भारतीय फौजें भी गयी, किसान कांग्रेस के करीब आए। 1915ई. में कांग्रेस ने चम्पारन जिले में किसानों की कठिनाईओं की जाँच के लिए कमीशन बैठाने का प्रस्ताव किया।

(कपिल 2018) में "*प्रेमचन्द साहित्य में भारतीय किसान*" का अध्ययन किया और पाया कि भारत की पहचान एक कृषि प्रधान राष्ट्र के रूप में रही है। स्वाधीनता पूर्व यहाँ की अधिकांश जनसंख्या गाँवों में निवास करती थी, आज यह आँकड़ा कम तो हो गया है, परन्तु अभी भी हमारे देश में गाँव बहुतायत में हैं। जहाँ स्वाधीनता के 70 वर्षों बाद भी मूलभूत सुविधाओं का अभाव है। ग्रामीण समाज का मुख्य व्यवसाय कृषि व कृषि आधारित है, परन्तु दुर्भाग्य आज भी हमारे

किसानों की स्थिति में अपेक्षित सुधार नहीं हो पाया है। आज भी वे ऋण के बोझ तले दबा हुआ आत्महत्या करने को विवश है।

(वर्मा 2016) में "*प्रेमचंद के किसान, पिछड़ी जातियाँ और भारतीय संस्कृति*" का अध्ययन किया और पाया कि प्रेमचंद ने किसान को साहित्य का विषय बनाया। उनके कथा-साहित्य में किसान-जीवन के विभिन्न पक्षों का चित्रण हुआ है। भारत का सबसे बड़ा वर्ग किसान रहा है। किसान भारत की कृषि-संस्कृति का मूलाधार है। किसान के बिना भारतीय संस्कृति का कोई भी विश्लेषण अधूरा होगा। यह बात बार-बार दुहराई गई है कि भारत एक कृषि-प्रधान देश है।

(सिंह 2017) में "*प्रेमचंद और किसान विमर्श*" का अध्ययन किया और पाया कि प्रेमचंद की कथा दृष्टि मूलतः किसान और गांव पर आधारित है। इनका संपूर्ण कथा साहित्य प्रत्यक्षतः इन्हीं दो विषयों के इर्द-गिर्द चक्कर काटता है। भारतीय जीवन पर अंग्रेजी शासन और अपनी ही अशिक्षा, अज्ञानता तथा स्वार्थांधता का दोहरा दबाव था जिसमें भारतीय जीवन को आर्थिक, धार्मिक, राजनीतिक, सामाजिक, मानसिक आदि सभी स्तरों पर गुलाम बनने को मजबूर कर दिया था। एक तरफ तो ब्रिटिश सरकार अपने फायदे के लिए भारतीयों का शोषण कर रही थी, वहीं कुछ ऊँचे वर्ग के धनी भारतीय इस बहते पानी में हाथ धो रहे थे, जिसके कारण भारतीयों को न सिर्फ विदेशी, अपितु देशी मार भी सहनी पड़ रही थी, जिसने उनके आत्मविश्वास की कमर तोड़ दी थी।

(Prasad 2018) में "*प्रेमचंद और किसान आंदोलन*" का अध्ययन किया और पाया कि प्रेमचंद की रचना की भाषा किसान-चेतना और संघर्ष की भाषा है। उन्हें समझौते की भाषा में तनिक विश्वास न था। वे आन्दोलन के दौर के लेखक थे। यह अंग्रेजी साम्राज्यवाद के खिलाफ एक व्यापक जनांदोलन का दौर था। प्रेमचंद इस दौर के प्रतिनिधि रचनाकार हैं। हिंदी साहित्य के पहले सितारे हैं जो रचना-जगत में जन्म से लेकर मृत्यु तक एक समान चमकते रहे हैं। अगर प्रेमचंद को कुछ क्षण के लिए साहित्यकारों की इस लंबी फेहरिस्त से निकाल दिया जाए तो दूसरा कोई नाम बाकी न रह जायेगा जिसने इतनी आत्मीयता और धैर्य के साथ आंदोलन के असली स्वरूप को समझने की कोशिश की हो।

(विश्वास n.d.) ने "*होरी की मृत्यु और किसानों की आत्महत्या*" का अध्ययन किया और पाया कि प्रेमचंद का कथा साहित्य सच्चे अर्थों में तत्कालीन समाज का अमूल्य दस्तावेज है और आज भी अधिकांशतः उसी रूप में सार्थक व प्रासंगिक बना हुआ है, क्योंकि बहुत सीमा तक समाज भी वहीं का वहीं है। समाज की जो चिंताएँ उस समय थीं आज और भी वीभत्स रूप में हमारे समक्ष प्रस्तुत

हैं। हालाँकि समाज पिछले दो दशकों से वहीं का वहीं नहीं है, तीव्रता से बदल रहा है, नए युग का नया अर्थशास्त्र आमूल-चूल बदल गया है।

(2020) में "*किसान जीवन के परिप्रेक्ष्य में गोदान*" का अध्ययन किया और पाया कि "गोदान' में प्रेमचंद ने होरी-धनिया के जीवन के माध्यम से उत्तर भारत के "शांति-प्रेमी किसान" की कष्टप्रद ज़िंदगी का चित्रण किया है। इस क्रम में उन्होंने संपूर्ण गाँवजीवन के आपसी संबंधों का ताना-बाना प्रस्तुत किया है, परंतु "गोदान' सिर्फ ग्रामकथा नहीं है। गाँव की कथा के साथ-साथ इसमें शहरी जीवन की कथा भी चलती रहती है जिसमें ज़मींदार राय साहब अमरपाल सिंह, मिर्जा खुर्शद, मिस मालती, मि.खन्ना, ओंकारनाथ, मि.मेहता आदि अनेक शहरी पात्र भी आते हैं। ये दोनों कथाएँ "गोदान" में अलग-अलग होते हुए भी साथ-साथ चलती हैं। प्रेमचंद साहित्य के अनेक आलोचकों का मत है कि "गोदान" में प्रेमचंद को सिर्फ होरी-धनिया के गाँव की कहानी कहनी चाहिए थी।

(शर्मा 2017) में "*किसान जीवन के संघर्षों की त्रिवेणी*" का अध्ययन किया और पाया कि साहित्य समाज को देखने का एक अच्छा जरिया है। जिस समय प्रेमचन्द 'गोदान' और 'प्रेमाश्रम' उपन्यास लिख रहे थे उस समय भारत में स्वतंत्रता आन्दोलन चल रहा था। किसान सामन्ती और जमींदारी तथा महाजनी जैसी कुव्यवस्थाओं से जूझ रहा था। समाज में घटित होने वाली घटनाओं का प्रभाव लेखक पर पड़ना स्वाभाविक था। आम तौर पर प्रेमचन्द को किसानों का कथाकार कहा जाता है और गोदान भारतीय किसानों के जीवन का महाकाव्य। हिंदी साहित्य में औपन्यासिक क्षेत्र में पहली बार ऐसा हुआ था जब प्रेमचन्द ने किसी किसान को नायक बनाकर उपन्यास लिखा तथा किसानों की दयनीय स्थिति को हू-ब-हू अभिव्यक्त किया है।

(कुशवाहा 2016) में "*हिन्दी कहानी और किसान अनुभूति*" का अध्ययन किया और कहा कि आज खेती-किसानी के सवाल और सवालों की शक्ल बदल गई है। किसानी के जटिल प्रश्नों को आयातित विचारों और लम्पट कारपोरेटी आक्टोपसी भुजाओं ने फांस कर, खाद्यान्न, खाद, बीज और कीटनाशकों पर नियंत्रण कर, अपने व्यवसाय का संवर्धन किया है । दुनिया का मठाधीश बनने वालों के पांव, किसानों की पीठ और पेट पर पड़ रहे हैं। गांव की जल, जमीन, जंगल का दोहन उनके एजेंडे में है। अपने माल को खपाने के लिए गांवों को उपभोक्ता बनाने की चाल, उनके एजेंडे में है। उनका अगला पड़ाव कारपोरेट खेती है । किसानों के पास खोने को जमीन के अलावा और कुछ बचा नहीं है। भूमि अधिग्रहण, विकास का मूलमंत्र बना दिया गया है। ताल्लुकदारों और ज़मींदारों द्वारा औपनिवेशिक काल के बेदखली की ही तरह, जमीन हड़पने का काम, कुछ भिन्न तरीके से शुरू हो चुका है।

प्रेमचंद के साहित्य की विशेषताएँ

प्रेमचन्द की रचना-दृष्टि, विभिन्न साहित्य रूपों में, अभिव्यक्त हुई। वह बहुमुखी प्रतिभा संपन्न साहित्यकार थे। प्रेमचंद की रचनाओं में तत्कालीन इतिहास बोलता है। उन्होंने अपनी रचनाओं में जन साधारण की भावनाओं, परिस्थितियों और उनकी समस्याओं का मार्मिक चित्रण किया। उनकी कृतियाँ भारत के सर्वाधिक विशाल और विस्तृत वर्ग की कृतियाँ हैं। अपनी कहानियों से प्रेमचंद मानव-स्वभाव की आधारभूत महत्ता पर बल देते हैं। 'बड़े घर की बेटी,' आनन्दी, अपने देवर से अप्रसन्न हुई, क्योंकि वह गंवार उससे कर्कशता से बोलता है और उस पर खींचकर खड़ाऊँ फेंकता है। जब उसे अनुभव होता है कि उनका परिवार टूट रहा है और उसका देवर परिताप से भरा है, तब वह उसे क्षमा कर देती है और अपने पति को शांत करती है। इसी प्रकार 'नमक का दारोग़ा' बहुत ईमानदार व्यक्ति है। घूस देकर उसे बिगाड़ने में सभी असमर्थ हैं। सरकार उसे, सख्ती से उचित कार्रवाई करने के कारण, नौकरी से बर्ख़ास्त कर देती है, किन्तु जिस सेठ की घूस उसने अस्वीकार की थी, वह उसे अपने यहाँ ऊँचे पद पर नियुक्त करता है। वह अपने यहाँ ईमानदार और कर्तव्यपरायण कर्मचारी रखना चाहता है। इस प्रकार प्रेमचंद के संसार में सत्कर्म का फल सुखद होता है। वास्तविक जीवन में ऐसी आश्चर्यप्रद घटनाएँ कम घटती हैं। गाँव का पंच भी व्यक्तिगत विद्वेष और शिकायतों को भूलकर सच्चा न्याय करता है। उसकी आत्मा उसे इसी दिशा में ठेलती है। असंख्य भेदों, पूर्वाग्रहों, अन्धविश्वासों, जात-पांत के झगड़ों और हठधर्मियों से जर्जर ग्राम-समाज में भी ऐसा न्याय-धर्म कल्पनातीत लगता है। हिन्दी में प्रेमचंद की कहानियों का एक संग्रह बम्बई के एक सुप्रसिद्ध प्रकाशन गृह, हिन्दी ग्रन्थ-रत्नाकर ने प्रकाशित किया। यह संग्रह 'नवनिधि' शीर्षक से निकला और इसमें 'राजा हरदौल' और 'रानी सारन्धा' जैसी बुन्देल वीरता की सुप्रसिद्ध कहानियाँ शामिल थीं।

उपसंहार

प्रेमचन्द का उपन्यास सृजन सन् 1902 में प्रांरभ हो जाता है। इस समय आपकी आयु केवल 22 वर्ष की थी। आपके टैगोर की कहानियों के अनुवाद उर्दू पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए। आपकी सबसे पहली कहानी 'संसार का सबसे अनमोल रत्न' सन् 1900 में जमाना पत्रिका में प्रकाशित हो चुकी थी। इसी वर्ष आपने 'कृष्ण' नामक उपन्यास की भी रचना की। सन् 1902 में 'वरदान' तथा सन् 1902 में ही 'प्रेमा' और 1906 में 'प्रतिज्ञा' उपन्यास की रचना की सन् 1908 में जमाना प्रेम से 'सोजे वतन' के नाम से पाँच कहानियों का एक संग्रह प्रकाशित हुआ जो सरकार द्वारा जप्त कर लिया गया। आप नवाबराय के नाम से कथा साहित्य की रचना करते रहे। सोजे वतन की जप्ती

के पश्चात् प्रेमचन्द के नाम से लिखने लगे और उर्दू से हिन्दी की ओर आ गये। 'सेवासदन' प्रेमचन्द का प्रथम उपन्यास है। यह सन् 1916 में प्रकाशित हुआ इससे पूर्व आप 'वरदान' 'प्रतिज्ञा' या 'प्रेमा' और 'रूठी रानी' उपन्यास लिख चुके थे।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. Anon. 2020. "किसान जीवन के परिप्रेक्ष्य में गोदान."
2. Prasad, Raju Ranjan. 2018. "प्रेमचंद और किसान आंदोलन."
3. कपिलगीता. 2018. "प्रेमचन्द साहित्य में भारतीय किसान."
4. कुशवाहासुभाष चन्द्र. 2016. "हिन्दी कहानी और किसान अनुभूति."
5. कौरसंदीप. 2017. "प्रेमचंद का कथा साहित्यः भारतीय किसान की स्थिति."
6. वर्माकमलेश. 2016. "प्रेमचंद के किसान, पिछड़ी जातियाँ और भारतीय संस्कृति."
7. विश्वासअमित कुमार. n.d. "होरी की मृत्यु और किसानों की आत्महत्या."
8. शर्माइन्द्रदेव. 2017. "किसान जीवन के संघर्षों की त्रिवेणी."
9. सिंहडॉ. मीनाक्षी जयप्रकाश. 2017. "प्रेमचंद और किसान विमर्श.
10. शर्मा, रामविलास (1991) प्रेमचन्द्र का आलोचनात्मक परिचय - बनारस सरस्वती प्रेस, बनारस ।